DATE / /

## उद्देश्य =

साधर्मी भाई बहनों को शुद्धात्म वंदन ।।।

वर्तमान निकृष्ट पंचम काल में बच्चों को युवाओं को जैनत्व के संस्कार देना अत्यंत जरूरी है, हम प्रत्यक्ष देख रहें हैं बच्चे, युवा पीढ़ी संस्कार हीनता के कारण अंट्शंट चेष्टायें कर रहे हैं, और समाज का, परिवार का मस्तक शर्म से झुका रहे हैं। बच्चों के भविष्य को निखारने के लिये एक ही माध्यम है वो है पाठशाला, पाठशाला के ही माध्यम से बच्चों को आगम अनुसार जीवन जीने की कला सिखा सकते हैं। जिससे वो समाज एवं देश में अपना विशिष्ट स्थान बनाकर अपना मनुष्य भव सफल कर सकें।।

पाठशाला के माध्यम से हम बच्चों को संस्कारित कर हम विद्वान तैयार कर सकते हैं जिससे वो समाज में स्वाध्याय करा सकें और अंत समय में समाधि मरण में संबोधित कर सकें एवं शिविर का संचालन कर पाठशाला का संचालन कर सकते हैं। संस्कारित कर हम अपने बच्चों के भविष्य के प्रति आश्वस्त हो सकते हैं।।

Scanned with CamScanner

DATE / /

## उद्देश्य - (मुख्य बिन्दु)

① बच्चों को पाठशाला के माध्यम से सुसंकारित कर हम समाज मे नये-नये विद्वान बना सकते हैं जो कि तत्व के प्रचार प्रसार मे सहायक बन सकें।

② इसके माध्यम से बच्चों मे आगमानुकूल जीवन जीने की कला सिखा सकते हैं।

③ पाठशाला के ही माध्यम से हमारे बच्चे जैन धर्म का महत्व समझ कर उसकी गरिमा और महिमा की रक्षा कर सकेंगे॥

④ पाठशाला के माध्यम से हम बच्चों मे सद-साहित्य के प्रति रुचा जगा कर मोबाइल से डर कर सकते हैं।

⑤ जैनत्व के संस्कारों से परिपूर्ण बच्चे सच्चे सुख की प्राप्ति के लिये मोक्षमार्ग मे आगे बढ़ेंगे॥

⑥ पाठशाला से संस्कारित बच्चे विशिष्ट आचरण से अपनी पहचान बनायेंगे और जैन धर्म की गरिमा बढ़ायेंगे॥प्रभावना होगी॥

⑦ वर्तमान मे कुछ बच्चे संस्कारहीन होकर कुचेष्टायें करते हैं वो बच्चे पाठशाला के माध्यम से जैनत्व के संस्कार पाकर निश्चित रुप से कुमार्ग मे जाने से बचेंगे॥

Scanned with CamScanner

DATE / /

अध्यापक की विशेषता :—

जिस तरह एक माली अपनी विशेष योग्यता और कला के माध्यम से अपनी बगिया के पुष्पों को सजाता है, उन्हे रोगों से बचाता है उसी तरह एक अध्यापक अपने शिष्यों को संस्कार और सदाचार रूपी खाद पानी देकर सुवासित करता उन्हे महकने योग्य बनाता है।

शिक्षक की विशेष योग्यतायें :—

(1) प्रथम तो शिक्षक का आचरण आदर्श मयी होना चाहिये।
(2) शिक्षक के आचरण से जैनत्व की झलक दिखे।
(3) रात्रिभोजन और कंदमूल का त्यागी हो।
(4) समय के प्रति प्रतिबद्ध हो।
(5) वाणी मे मृदुता और उच्चारण शुद्ध होना चाहिये।
(6) पहनावा अच्छा हो।
(7) कक्षा के समय हास परिहास न होने पाये।
(8) कक्षा मे लड़के लड़कियों की उचित बैठक करावे।
(9) छात्र छात्राओं का हाजिरी रजिस्टर हो।
क्रमशः पढ़ाई करवाये।।
(10) प्रत्येक रविवार प्रतियोगिता करवा कर पारितोषक का वितरण करे।
(11) जो बच्चे कमजोर हैं उन्हे विशेष स्नेह से पढ़ावे।।

Scanned with CamScanner

(१२) बच्चों की बुरी आदतों को एकांत में स्नेह पूर्वक समझा कर दोष दूर करे ॥

(१३) समय समय पर बच्चों को स्वल्पाहार का आयोजन करे।

(१४) वर्ष में एक बार तीर्थयात्रा पर जावे।

(१५) इलेक्ट्रानिक, तकनीकी माध्यम से पढ़ाई करावें।

(१६) समय समय पर बच्चों के एकांगी-प्रहसन गायन के माध्यम से बच्चों की कला निखारे

(१७) शिक्षक का आचरण एवं शिष्टाचार योग्य होना चाहिये।

(१८) शिक्षक बच्चों को प्रोत्साहित करे, उनमे छिपी हुई कला को निखारे।

(१९) बच्चों मे अनुशासन का महत्व बतावे।

(२०) बच्चों मे विनय गुण को पल्लवित करे

(२१) शिक्षक को बच्चों को विश्वास मे लेना चाहिऐ जिससे बच्चे अपनी समस्या बता सकें ॥

Scanned with CamScanner

DATE / /

## पद्धति और अन्य विषय:—

वर्तमान समय तकनीकी का है, वर्तमान के बच्चे नये नये डिवाइस से परिचित हैं तो प्रोजेक्टर, लेपटॉप, और टैब के माध्यम से भी पढ़ाई करावें. जिससे बच्चों मे रोचकता बढ़ेगी. और पढ़ाई के प्रति आकर्षण बढ़ेगा। प्राचीन पद्धति से भी पढ़ाई करवाये और उसका महत्व भी बना रहे।

और अन्य विषयों मे बच्चों मे नैतिक शिक्षा अवश्य दी जाये जिससे सामाजिक, और पारिवारिक परिवेश मे अपनी शील की रक्षा करते हुये, शुद्ध खानपान रखते हुये, किस तरह अपने सामाजिक, पारिवारिक, और धार्मिक कर्तव्यों का निर्वाह करते हुये उत्कृष्ट जीवन जियें और समाज मे आदर्श बनें और अपना अमूल्य मनुष्य भव सफल कर सकें॥

"जयजिनेन्द्र"

सुधीर जैन
करेली
9425467735

Scanned with CamScanner